शहरी क्षेत्र में आजीविका

पाठ्यपुस्तक के आंतरिक प्रश्न

1. इस चित्र में आप क्या देख रहे हैं? (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-88)

उत्तर चित्र में शहर की एक व्यस्त सड़क दिखाई दे रही है। सड़क पर काफी भीड़-भाड़ है। गाड़ियाँ, स्कूटर, बसें, साइकिल तथा पैदल लोग हैं। अलग-अलग तरह की दुकानें, रेहड़ी पर समान बेचने वाले, फुटपाथ पर काम करने, अखबार बेचने वाले तथा विभिन्न काम करने वाले लोग दिखाई दे रहे हैं।

2. आप पहले ही ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के कार्यों के बारे में पढ़ चुके हैं। अब पिछले पाठ में दिए गए ग्रामीण क्षेत्र के कार्यों के चित्र से इस चित्र की तुलना कीजिए। (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-88)

उत्तर पिछले अध्याय में ग्रामीण क्षेत्र में लोग खेती-बाड़ी का काम करते दिखाए गए हैं। कुछ मछली पकड़ने का काम कर रहे हैं, छोटी-छोटी दुकानें हैं। पिछले अध्याय के चित्र में न तो गाड़ियाँ थीं और न ही भीड़-भाड़ थी। इस चित्र में सड़क पर वाहनों की भीड़भाड़ है तथा फुटपाथ पर विभिन्न प्रकार की सेवा देने वाले तथा समान बेचने वाले लोगों की भीड़ है।

3. शहर का एक भाग दूसरे भाग से अलग होता है। आपने ऊपर वाले चित्र में क्या भिन्नताएँ देखीं? (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-88)

उत्तर शहर के कुछ भागों में ऊँची-ऊँची इमारतें होती हैं तथा वाहनों की काफी भीड़-भाड़ होती है, जबकि कुछ भागों में छोटे-छोटे घर होते हैं तथा काफी भीड़-भाड़ होती है और फुटपाथ पर काम करने वालों तथा अन्य सेवाएँ उपलब्ध कराने वालों की भीड़ होती है।

4. बच्चू माँझी शहर क्यों आया था? (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-91)

उत्तर बच्चू माँझी शहर में काम की तलाश में आया है। गाँव में वह मिस्त्री का काम करता था, परंतु उसे नियमित रूप से काम नहीं मिलता था जो कमाई होती थी वह परिवार के लिए पूरी नहीं पड़ती थी।

5. बच्चू अपने परिवार के साथ क्यों नहीं रह सकता? (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-91)

उत्तर बच्चू माँझी गाँव से शहर में आया था और उसका परिवार गाँव में ही रहता था, इसलिए वह अपने परिवार के साथ नहीं रह

सकता था।

6. किसी सब्ज़ी बेचने वाली या ठेले वाले से बात करिए और पता लगाइए कि वे अपना काम कैसे करते हैं-तैयारी, खरीदना, बेचना इत्यादि। (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-91)

उत्तर सब्ज़ी बेचने वाले सुबह-सुबह थोक की मंडी से सब्जी खरीदकर लाते हैं। वे ज्यादा-से-ज्यादा प्रकार की सब्ज़ियाँ प्राप्त करने की कोशिश करते हैं ताकि सभी प्रकार के ग्राहकों की आवश्यकता को पूरा कर सके। – वे गली-गली आवाज लगाकर सब्ज़ियाँ बेचते हैं और शाम तक अपनी सारी सब्ज़ियाँ बेचने का प्रयास करते हैं।

7. बच्चू को एक दिन की छुट्टी लेने से पहले भी सोचना पड़ता है। क्यों? (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-91)

उत्तर बच्चू माँझी रिक्शा चलाकर एक दिन में 80 से 100 रुपये कमा लेता है जिस दिन वह छुट्टी करता है तो उस दिन कमाई नहीं हो पाती है जिससे उसे 80 से 100 रुपये का नुकसान हो जाता है। यदि वह छुट्टी करेगा। तो पैसा बचाकर अपने गाँव परिवार के लिए पैसा भी नहीं भेज पाएगा।

8. वंदना और हरप्रीत ने एक बड़ी दुकान क्यों शुरू की? उनको यह दुकान चलाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है? (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-93)

उत्तर वंदना और हरप्रीत ने एक बड़ी दुकान शुरू की है। इस दुकान पर उन्होंने काम भी बदला है और रेडीमेड कपड़ों की दुकान शुरू की है, क्योंकि आजकल लोग कपड़े सिलवाने की अपेक्षा सिले-सिलाए कपड़े खरीदना पसंद करते हैं। वंदना एक ड्रेस डिजायनर भी है। इस शोरूम को चलाने के लिए उन्हें अलग जगहों पर समान खरीदना पड़ता है। कुछ कपड़े विदेशों से भी मँगवाने पड़ते हैं। शोरूम को सही रूप से चलाने के लिए उन्हें विभिन्न अखबारों में, सिनेमा हॉल में, टेलीविजन और रेडियो चैनल पर विज्ञापन देने पड़ते हैं ताकि लोगों को इसके बारे में पता चले। वे रेडिमेड कपड़ों को आकर्षक रूप से सजाकर रखते हैं।

9. एक बड़ी दुकान के मालिक से बात कीजिए और पता लगाइए कि वे अपने काम की योजना कैसे बनाते हैं? क्या पिछले बीस सालों में उनके काम में कोई बदलाव आया है? (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-93)

उत्तर एक बड़ी दुकान के मालिक अपने सामान को अलग-अलग स्थानों से खरीदते हैं ताकि सामान में विभिन्नता आ सके। इसके लिए वह योजना बनाते हैं किन-किन स्थानों से सामान खरीदना है ताकि ग्राहकों को विविधता उपलब्ध कराई जा सके। वे अपने सामान के विषय में विभिन्न माध्यमों से विज्ञापन भी देते हैं ताकि अधिक-से-अधिक लोगों को अपनी दुकान के बारे में जानकारी दे सकें। पिछले बीस वर्षों में उनके काम में काफी बदलाव आया है ग्राहकों की संख्या बढ़ी है तथा ग्राहकों की पसंद में बदलाव आया है दुकानों की संख्या बढ़ी है, दुकानों के बीच प्रतियोगिता बढ़ी है।

10. जो बाज़ार में समान बेचते हैं और जो सड़कों पर सामान बेचते हैं, उनमें क्या अंतर है? (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-93)

उत्तर

बाजार में सामान बेचने वाले –

1. बाजार में सामान बेचने के लिए छोटी तथा बड़ी दुकानें होती हैं।
2. बाज़ार में दुकानें पक्की होती है जिनके पास व्यापार करने का लाइसेंस होता है।
3. बाज़ार में दुकानों पर अलग-अलग चीजें बेची जाती हैं।
4. ज्यादातर व्यापारी अपनी दुकान खुद सँभालते हैं और कभी-कभी वे कई लोगों को सहायक या मैनेजर के रूप में भी रख लेते हैं।

सड़क पर सामान बेचने वाले –

1. सड़क पर सामान बेचने वालों की दुकान खंभों पर तिरपाल या प्लास्टिक चढ़ाकर बनाई जाती है। यह अस्थायी दुकान होती है।
2. ये अपने ठेले या सड़क की पटरी पर प्लास्टिक बिछाकर भी काम चलाते हैं।
3. सड़कों पर बनी इन अस्थायी दुकानों को पुलिस कभी भी हटाने के लिए कह सकती है।
4. सड़क पर सामान बेचने वाले स्वयं अपने परिवार के साथ मिलकर सामान बनाते हैं या स्थानीय रूप से ही यह सामान बनाया जाता है।

11. आपको क्या लगता है कि फैक्ट्रियाँ या छोटे कारखाने मजदूरों को अनियमित रूप से काम पर क्यों रखते हैं? (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-96)
उत्तर फैक्ट्रियाँ या छोटे कारखाने मजदूरों को अनियमित काम पर इसलिए रखते हैं ताकि उन्हें अधिक-से अधिक लाभ हो सके। जब मालिक को बहुत सारा काम मिलता है या फिर किसी विशेष मौसम में काम मिलता है तो उन्हें कारीगरों या मज़दूरों की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में वे उन्हें काम पर रख लेते हैं और जब काम की कमी होती है तो उन्हें हटा दिया जाता है।

12. निर्मला जैसे मजदूरों की काम करने की परिस्थितियों का निम्न के आधार पर विवरण दीजिए, काम के घंटे, कमाई, काम करने की जगह व सुविधाएँ, साल भर में रोजगार के दिनों की संख्या। (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-96)
उत्तर निर्मला जैसे मजदूरों की काम करने की परिस्थितियाँ –

1. **काम के घंटे –** मजदूरों को सुबह 9 बजे से रात के 10 बजे तक काम करना पड़ता है। उनके कामके घंटे अधिक होते हैं। उन्हें सप्ताह में छः दिन काम करना पड़ता है और यदि काम अधिक है तो रविवार को भी काम करना पड़ता है।
2. **कमाई –** रोजना आठ घंटे काम करने के 80 रुपये मिलते हैं और अतिरिक्त 40 रुपये देर तक काम करने का मिलता है।
3. **काम करने की जगह व सुविधाएँ –** लोग छोटे से कमरे में मशीनों पर काम करते हैं। उन्हें किसी भी प्रकार की सुविधाएँ नहीं प्राप्त होती हैं। अगर कारीगर परिस्थितियों के बारे में शिकायत करते हैं तो उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाता है। अगर कोई बुरा व्यवहार करे तो उनके बचाव के लिए कुछ नहीं होता है।

सालभर में रोजगार के दिनों की संख्या – अधिकतर कारीगर या मज़दूर अनियमित रूप से काम करते हैं। सालभर में करीब 8 महीने उनके पास काम होता है बाकी के करीब 4 महीने उनके पास काम नहीं रहता है।

13. क्या आप यह मानेंगे कि दूसरों के घरों में काम करने वाली महिलाएँ भी अनियमित मज़दूरों की श्रेणी में आती हैं, क्यों? एक ऐसी कामगार महिला के दिनभर के काम का विवरण दीजिए। (एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तक, पेज-96)
उत्तर दूसरों के घरों में काम करने वाली महिलाएँ भी अनियमित मजदूरों की श्रेणी में आती हैं, क्योंकि उन्हें कभी भी हटाया जा सकता है, या बदला जा सकता है। कामगार महिलाएँ लोगों के घरों में काम करने आती हैं। और वे सारा काम सँभालती है; जैसे-घर की सफाई, कपड़े धोना, खाना बनाना, बर्तन धोना आदि। दोपहर में अधिक काम न होने के कारण वे आराम कर सकती हैं। सारा काम लगभग रात 10 बजे खत्म होता है।

प्रश्न-अभ्यास
(पाठ्यपुस्तक से)

1. नीचे लेबर चौक पर आने वाले मजदूरों की जिंदगी का विवरण दिया गया है। इसे पढ़िए और आपस में चर्चा कीजिए कि लेबर चौक पर आने वाले मजदूरों के जीवन की क्या स्थिति है?
लेबर चौक पर जो मज़दूर रहते हैं उनमें से ज्यादातर अपने रहने की स्थायी व्यवस्था नहीं कर पाते और इसलिए वे चौक के पास फुटपाथ पर सोते हैं या फिर पास के रात्रि विश्राम गृह (रैन बसेरा) में रहते हैं। इसे नगरनिगम चलाता है और इसमें छः रुपया एक

बिस्तर का प्रतिदिन किराया देना पड़ता है। सामान की सुरक्षा का कोई इंतज़ाम न रहने के कारण वे वहाँ के चाय या पान-बीड़ी वालो की दुकानों को बैंक के रूप में इस्तेमाल करते हैं। उनके पास वे पैसा जमा करते हैं और उनसे उधार भी लेते हैं। वे अपने औज़ारों को रात में उनके पास हिफाजत के लिए छोड़ देते हैं। दुकानदार मजदूरों के सामान की सुरक्षा के साथ ज़रूरत पड़ने पर उन्हें कर्ज भी देते हैं। **स्रोत : हिंदू ऑन लाइन, अमन सेठी**

उत्तर लेबर चौक पर आने वाले मजदूरों के पास स्थायी काम नहीं होता है। वे दिहाड़ी मज़दूर होते हैं और विभिन्न तरह का काम करते हैं; जैसे-मकान बनाने का काम करने वाले राजमिस्त्री, घरों में रंग पेंट करने वाले मिस्त्री, फनीचर का काम करने वाले मिस्त्री, पलम्बर का काम करने वाले, वजन उठाने या खुदाई का काम करने वाले मजदूर इत्यादि। स्थायी काम न होने के कारण गरीबी में जीवन व्यतीत करते हैं। इनके रहने और खाने की कोई स्थायी व्यवस्था नहीं होती है और जिसे काम नहीं मिलता है उसे पूरा दिन लेबर चौक पर ही बैठे रहना पड़ता है और शाम को खाने के लिए उधार लेना पड़ता है और जब कई दिनों तक लगातार काम नहीं मिलता है तो कभी-कभी भूखे पेट भी सोना पड़ता है। इनके साथ कार्य स्थलों पर अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है। निश्चित समय से अधिक समय तक काम करवाया जाता है और सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी से कम मज़दूरी दी जाती है। इस प्रकार इनका जीवन काफी कठिन होता है।

2. निम्नलिखित तालिका को पूरा कीजिए और उनका काम किस तरह से अलग है इसका वर्णन कीजिए।

नाम	काम की जगह	आय	काम की सुरक्षा	सुविधाएँ	स्वयं का काम या रोज़गार
बच्चू माँझी		100 रु. प्रतिदिन			
हरप्रीत और वंदना					स्वयं का काम
निर्मला			कोई सुरक्षा नहीं		
सुधा	कंपनी	30,000 रु. प्रति माह			

उत्तर

नाम	काम की जगह	आय	काम की सुरक्षा	सुविधाएँ	स्वयं का काम या रोज़गार
बच्चू माँझी	सड़क		नहीं	नहीं	स्वयं का काम
हरप्रीत और वंदना	शोरूम	अच्छी आय लेकिन निश्चित नहीं	हाँ	कार और फ्लैट खरीद लिया है	स्वयं का काम
निर्मला	कपड़े सिलने की फैक्ट्री	80 रूपये प्रतिदिन	नहीं	नहीं	रोजगार
सुधा			हाँ	भविष्य निधि, छुट्टियाँ, परिवार के लिए चिकित्सा सुविधाएँ	रोजगार

3. एक स्थायी और नियमित नौकरी अनियमित काम से किस तरह से अलग है?

उत्तर एक स्थायी और नियमित नौकरी करने वाले की एक निश्चित मासिक आय होती है। स्थायी कर्मचारी होने के कारण विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ भी मिलती हैं; जैसे- भविष्य निधि, छुट्टियाँ, परिवार के लिए चिकित्सा सुविधाएँ, मकान या मकान का किराया इत्यादि। काम करने का निश्चित समय और घंटे निश्चित होते हैं, जबकि अनियमित कर्मचारी की मासिक आय निश्चित नहीं होती है। वह जितने दिन काम करता है उतने दिनों का पैसा मिलता है कोई निश्चित छुट्टी नहीं होती है। किसी भी प्रकार की सुविधाएँ नहीं मिलती हैं। काम समय और घंटे निश्चित नहीं होते हैं। काम की भी सुरक्षा नहीं होती है।

4. सुधा को अपने वेतन के अलावा और कौन-से लाभ मिलते हैं?

उत्तर सुधा को वेतन के अलावा निम्नलिखित लाभ मिलते हैं

1. रविवार और राष्ट्रीय अवकाश छुट्टियाँ।
2. वार्षिक छुट्टियाँ।
3. परिवार के लिए चिकित्सा सुविधाएँ और बीमार होने पर चिकित्सा अवकाश।
4. भविष्य निधि की सुविधा।

5. नीचे दी गई तालिका में अपने परिचित बाज़ार की दुकानों या दफ्तरों के नाम भरें कि वे किस प्रकार की चीजें या सेवाएँ मुहैया कराते हैं?

दुकानों या दफ्तरों के नाम	चीज़ों/सेवाओं के प्रकार

उत्तर

दुकानों या दफ्तरों के नाम	चीज़ों/सेवाओं के प्रकार
सुनील डेयरी	दूध और दूध से बनी वस्तुएँ
गैस एजेंसी	खाना पकाने के लिए एल.पी.जी. गैस की बुकिंग और डिलीवरी
दिल्ली जल बोर्ड	दिल्ली में पानी की सप्लाई
एन.डी.पी.एल.	उत्तरी दिल्ली में बिजली की सप्लाई
अस्पताल	विभिन्न प्रकार की चिकित्सा सुविधाएँ